आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023
Received: 20/08/2023; Accepted: 14/09/2023; Published: 24/09/2023

साहित्य में मिथक: स्वरूप एवं विशेषताएँ

[1] **सुनिता शंकर पवार**, [2] **प्रो.डॉ. शिवाजी सांगोळे**
हिंदी विभागाध्यक्ष,
मोरेश्वर महाविद्यालय, भोकरदन, जि. जालना

[1]सुनिता शंकर पवार, [2]प्रो.डॉ. शिवाजी सांगोळे, **साहित्य में मिथक: स्वरूप एवं विशेषताएँ** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023, (398-402)

[1] **सुनिता शंकर पवार**, शोध –छात्रा, [2] **प्रो.डॉ. शिवाजी सांगोळे**, शोध निर्देशक, हिंदी विभागाध्यक्ष, मोरेश्वर महाविद्यालय, भोकरदन, जि. जालना

सारांश

जिस तरह साहित्य समाज का वास्तव प्रस्तुत करता है उसी तरह साहित्य समाज में प्रचलित बातों को भी समाज के सामने प्रस्तुत रखने का कार्य करता है। साहित्यकार अपने साहित्य में प्रचलित मिथकों का प्रयोग साहित्य को रंजक बनाने का प्रयास करता है। इस शोधालेख में साहित्य में मिथक का प्रयोग किस तरह से होता है, मिथक की परिभाषा, उसका अर्थ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

बीजसंज्ञा- मिथक, साहित्य, अवधारणा, इतिहास, परिभाषा.

भूमिका:

दुनिया के प्रत्येक समाज में मिथकों का निर्माण हजारों वर्षों से होता चला आ रहा है और आज भी एक अलग उद्देश्य सामने रखकर क्यों न हो, मिथकों का निर्माण हो रहा है। इसका मूल संबंध देवविद्या के साथ माना जाता रहा है। परंतु आधुनिक काल में मनोविज्ञान, नृविज्ञान, भाषाविज्ञान, दर्शनशास्त्र आदि के साथ भी उसका सम्बन्ध घनिष्ठता के साथ जोड़ा जाता है।

प्राचीन काल में इसे पौराणिक कथा, ब्रहम मिमांसा या साम्प्रदायिक धर्म विश्वास के रूप में देखा जाता था । कभी उसे झूठ भी कहा गया। डॉ. प्रेमशंकर ने डॉ. वीरेन्द सिंह के "मिथक दर्शन का विकास" पुस्तक की समीक्षा करते हुए लिखा है "आधुनिक चिंतन में मिथ अथवा मिथक की पर्याप्त चर्चा हुई है और हिन्दी में इसके लिए पुराणकथा आदि शब्दों का भी उपयोग हुआ है, यद्यपि मिथक ही अधिक प्रचलित है।" कभी इसे तर्क बुध्दि का शत्रु भी कहा गया था । लेकिन नवजागरण के बाद बुध्दिवादी, प्रगतिशील और राष्ट्रीय आंदोलनों में मिथक का पुनः निर्माण हुआ ।

यथार्थ को गहनता से जानने और व्यक्त करने के लिए मिथक अवसर प्रदान करता है । इसलिए वे एक दूसरे के विरोधी नहीं कहे जा सकते । डॉ. बी. ए. जोशीजी लिखते हैं "नवयुगीन पौराणिक नाटकों में व्याख्या करने के प्रयास हिन्दी तथा मराठी में समान रूप में डॉ. नगेन्द्र 'मिथक' के बारे में लिखते हैं उत्पन्न अनास्था और तज्जन्य संत्रास एवं व्यर्थता आदि की वर्तमान युग के मानव की चेतना में जीवन के शाश्वत एवं पुराण मिथको की नई हुऐ ।'

"अति बौध्दिकता से दुष्कल्पनाओं से अभिभूत अखंड प्रवाह में प्रतीति उत्पन्न कर मिथक विधा उसे अंधःकार से प्रकाश की ओर असत् से सत् की ओर और मृत्यु से अमरत्त्व की ओर प्रेरित करने का प्रभावी साधन है। इसप्रकार मिथक का ज्ञान जीवन की भौतिक सीमाओं को तोडकर मानव चेतना को परमतत्त्व अथवा परमार्थ के प्रति उन्मुख करता है ।"

मिथक की परिभाषा

'मिथक' अंग्रेजी 'मिथ' शब्द का हिन्दी पर्याय है और अंग्रेजी 'मिथ' शब्द यूनानी भाषा के 'माइथॉस' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है 'आप्तवचन' अथवा 'अतर्क्यवचन' । हिन्दी में इसके लिए 'कल्पकथा', 'पुराकथा' आदि अन्य शब्दों का भी प्रयोग हुआ है, किन्तु अब 'मिथक' ही एक प्रकार से रूढ हो गया है ।

सामान्यतः इसका अर्थ यह माना जाता है कि मिथक एक ऐसी परपंरागत कथा है जिसका संबंध अतिप्राकृत घटनाओं और भावों से होता है। मिथक मूलतः आदिम मानव के समिष्टिमन की सृष्टि है जिसमें चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्राधान्य रहता है। द कनसाईज ऑक्सफर्ड डिक्शनरी में 'मिथ' की परिभाषा इसप्रकार दी गयी है -

"मिथ एक परम्परागत आख्यान होता है, जिसमें अति प्राकृतिक या काल्पनिक व्यक्तियों का अंकन होता है इस अंकन में अनेक प्रचलित आदर्श, प्राकृतिक अथवा सामाजिक घटनाओं पर आधारित होते हैं।"

कई पाश्चात्य समीक्षकों ने मिथक को पारेभाषिक करने का प्रयास किया है। फ्रेजर इसे 'सत्य का प्रज्वलित' रूप मानते है। कैसिरेर मानते है कि, मिथक बंधन और मुक्ति के उस दन्द की दिशा में पहला कदम है

जिसका अनुभव मानव - आत्मा स्वनिर्मित बिम्ब सृष्टियों के संदर्भ में करती है। मार्क शोरर ने इसे एक बृहदानयंत्रक बिम्ब माना है जो सामान्य जीवन के तथ्यों को दार्शनिक अर्थ प्रदान करता है।

हिन्दी में भी कई समीक्षकों ने इसकी परिभाषा दी है। जैसे डा. दशरथ ओझाने उसे 'सत् असत'से भिन्न एक विलक्षण प्रकार माना है। डा. गो. वा. कुलकर्णीने 'मिथ'के बारे में कहा है कि, आद्य बिम्ब जब कथा का बाना पहनकर धार्मिक पवित्रता से जुड़ पाते हैं, तब उन्हें 'मिथ' कहा जाता है।

इस प्रकार 'मिथक' को परिभाषित करने का कई आलोचकों से अलग-अलग ढंग से प्रयत्न किया है। यह तो जाहिर है कि, मिथक को अंतिम रूप से अभी तक किसी भी समीक्षक ने परिभाषित नहीं किया है।

मिथक का स्वरूप:

अंग्रेजी में 'मिथ' को कोरी कल्पना माना जाता है और संस्कृत में इसे अलौकिकता युक्त लोकानुभूति बताने वाली कथा माना जाता है। आचार्य हजारीप्रसाद दिवेदी ने इसी अर्थ को स्वीकार किया और 'मिथ' शब्द में 'क' प्रत्यय लगाया और 'मिथक' शब्द रूढ हो गया। मिथक और पुराण का सम्बन्ध घनिष्ठ माना जाता है । पुराण कथा अंग्रेजी में 'माइथालोजी- कहीं जाती है। लेकिन कथाओं में आदिम विश्वास होते हैं इनकी व्याख्या करना कठिण होता है। क्योंकि यही प्राचीन मनुष्य का आदिम काव्य है । नृतत्त्व शास्त्र के विद्वानों ने मिथक की खोज की है। उनके अनुसार मिथक यदि नष्ट भी हुऐ तो उसका अस्तित्त्व बना रहा है। इसलिए हम कह सकते है कि मनुष्य के चेतन मन में शेष रहते ही है।

मिथक में आस्था और विश्वास होता है बल्कि कहना चाहिए कि इसी के बलबूते पर मिथक की कल्पना तैयार होती है। इसका स्वभाव ऐसा है कि, प्रकृति, बौध्दिक व्याख्या आदि में उसका विलीन हो जाना । मिथक में प्रकृति उसका एक अंग बनकर आती है। डा रमेशकुन्तल मेघ के अनुसासर 'मिथक का प्रधान चरित्र पावनता है। मिथक की यथार्थता ऐतिहासिक न होकर पुनीत होती है। मिथक की यह पुनीत यथार्थता उसे तर्कपूर्ण चिंतन में अनुस्युत करती है । इसलिए मिथक की अंतभूमि चिंतन न होकर अनुभूति है।" हम कह सकते है कि सारे मिथक मनुष्य जीवन की देन है या मनुष्य ही उसका निर्माता है। आज जिसे हम विज्ञान मानते है उसी का प्राचीन रूप मिथक है। मिथक जड नहीं होते बल्कि युग की चेतना के साथ बदलते रहते हैं।

मिथक की अवधारणा -

मनुष्य में पहले मिथक की अवधारणा कब और कैसे हुई यह निश्चित तौर पर कहा नहीं जा सकता। जैसा कि सभी जानते है मिथक मनुष्य निर्मित है । लेकिन यह कहा जा कसता है कि, निर्मिति के मूल में प्रकृति ही रही है। सूर्य, चन्द्र, तारे, सांड, वृक्ष, बिजली, जल, धरती, अग्नि आदि प्राकृतिक मिथक विश्वभर के लोक विश्वास में निर्माण हुए। प्राचीन काल से लेकर आज तक सूर्य, चन्द्र को मिथक के रूप में माना जाता रहा है। भारतीय मिथक शास्त्र में सूर्य सात घोडों के रथपर सवारी करते है। ग्रीक मिथक शास्त्र में सूर्यदेवता का नाम

हेलियास माना गया है। मिस्त्र के एपिस नाम का सांड उत्पादक कर्ता का प्रतीक है। इसके सिरपर सूर्य तथा पार्श्व में मनुष्य की कल्पना वृत्ति, तार्किकता,, जिज्ञासावृत्ति और भावप्रवणता का योग महत्त्वपूर्ण है।

सूर्य के मिथक को अगर हम कह सकते हैं. कि जब मनुष्य ने सूर्य को देखा तो उसके मन में सूर्य के प्रति कई आशंकाएं निर्माण हुई। उसकी शक्ति से परिचित होने के बाद उसे एक प्रतीक के रूप में अपनाया गया। मनुष्य में कुछ तार्किकता एवं भाव प्रवणता जागृत होने के बाद उसके संबंध में होनेवाली कथाओं के प्रति लोगों में विश्वास जागृत हुआ और तब वह एक मिथक बन गया।

डा. नगेन्द्र ने मिथक के प्रयोजन बताते हुए लिखा है, ष्मिथक का एक स्पष्ट प्रयोजन यह है कि, वह आदिम युग से परंपरा रूप में प्राप्त मान्यताओं, संस्कारों एवं धार्मिक अनुष्ठानों की व्याख्या करता है। मिथक रचना का दूसरा प्रयोजन हे, प्राचीन विश्वासों और संस्कारों आदि को मान्यता प्रदान करना। साहित्य के समान मिथक में भी भावनाओं का विरेचन करने की क्षमता है ।

मिथक की विशेषताएँ -

जिन समीक्षकोंने मिथक की परिभाषा एवं उसके स्वरूप का विवेचन किया है। उन्होंनें मिथक की अलग-अलग विशेषताएं बतायी है।

1. मिथक युग से पूर्व प्रचलित वैज्ञानिक नियमों के अनुसार जीवन-तत्त्वों की व्याख्या करता है।
2. मिथक मानव, पशु, पंछी, साहित्य, संपूर्ण सृष्टि के उद्भव की कहानी मनोरम ढंग से कहता हैं।
3. उसका संबंध उस देश की धार्मिक भावना, जाती भावना, दार्शनिक चिंतन से जुड़ा होता है।
4. उसका उद्देश्य दार्शनिक जीवन दर्शन से प्रेरित होना चाहिए ।

मिथक और इतिहास -

मनुष्य के सांस्कृतिक इतिहास को जानने के लिए जातीय मिथकों के वैज्ञानिक अध्ययन में इतिहास ने उसके कार्यो को आगे बढाया । इतिहास से जानकारी हमें नहीं प्राप्त होती उसके बारे में मिथक बतलाता है। इतिहास अतीत की घटना के बाद बनता है जबकि मिथक उस घटना में अपना योग देता है। दीर्घकाल के बाद इतिहास मिथक बन जाता है। मिथक ऐतिहासिक स्थितिपर हावी होकर मनुष्य को ऐतिहासिक स्थिति भुलवा देता है। इस वजह से मिथकीय काल चिरंतन हो जाता है। "मिथक सत्य तथा इतिहास सत्य में मौलिक अंतर है। मिथक सत्य श्रध्दापर आश्रित है जबकि, इतिहास सत्य विज्ञानपर और मिथक सत्य कर्मकांड से गुंथा है और इतिहास सत्य तथ्यों से ।

मिथक और साहित्य -

किसी देश की जातीय संस्कृति की जानकारी के लिए साहित्य उत्तम साधन है। वेद, रामायण, महाभारत, पुराण आदि में अनेक मिथक देखे जा सकते है । लेकिन पुराणों में देवकथाएँ भरी है। वास्तव में

मिथक संस्कृति के वाहक है । राम, कृष्ण, शिव-पार्वती जैसे मिथक आज भी लोकप्रिय है। श्री भानुदास आगेडकरजी ने अपने जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों में परम्परा और आधुनिकता प्रबंध में कहा है मिथक और साहित्य का घनिष्ठ संबंध है। साहित्य के माध्यम से पुरातन मिथकों को नई अर्थवत्ता प्राप्त होती है । कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि साहित्यिक विधाओं में मिथक की परिकल्पना को साकार करने का प्रयास साहित्यकारों ने किया है। आजकल प्राचीन मिथकों का प्रयोग साहित्यकार अपने साहित्य में आधुनिक जीवन संदर्भ के रूप में ज्यादा करते हैं।"

साहित्यकार अपने साहित्य में मिथकों का प्रयोग करते हैं क्योंकि किसी भी देश के सामुहिक मन को अच्छी तरह से पहचानने का, संस्कृति की विरासत को आगे बढाने का मिथक एक महत्त्वपूर्ण साधन है । साहित्यकार पुराने मिथकों को नयी अर्थवत्ता में अभिव्यक्त करता है। मानव को आकृष्ट करने की शक्ति मिथक में होती है। साहित्यकार भी आकृष्ट होता है और मिथकों को आधुनिक जीवन संदर्भ में अभिव्यक्त करता है।

सन्दर्भ-

1) हिन्दी के पौराणिक नाटक - डॉ. बा. ए. जोशी, प्र. संस्करण. 1991,

2) मिथक और साहित्य डॉ. नगेन्द्र, संस्क, 1987, पृ. 28

3) THE CONCISE OXFORD DICTIONARY - N.W.FOWLER and F.G. FOWLER, Edi. 1990, P.784 - a traditional narrative use involving supernatural or imaginary persons and embodying popular ideas on natural or Social Phenomenaetc

4) मिथक और स्वप्न कामायनी की मनसौदर्य सामाजिक भूमिका - रमेश कुन्तल मेघ, संस्क. 1967, पृ. 207

5) मिथक और साहित्य डॉ. नगेन्द, संस्क. 1987, पृ. 27

6) मिथक और साहित्य डॉ. नगेन्द्र, संस्क 1987, पृ. 55

****